GOVERNMENT OF INDIA
NATIONAL LIBRARY, CALCUTTA.

Class No. H 891.4318

Book No. U 316 b

N. L. 38.

MGIPC—S8—21 LNL/59—25-5-60—50,000.

NATIONAL LIBRARY

This book was taken from the Library on the date last stamped. A late fee of 1 annaor 6 nP will be charged for each day the book is kept beyond a month.

139

28 MAY 2010

. L. 44.

NGIPC—S1—11 LNL/58—24-6-58—50,000.

भारत बधाई

अथवा

भारत सगाई

अर्थात्

श्रीमन्महाराजाधिराज सम्राट् श्री सप्तम एडवर्ड के भारत
साम्राज्याभिषेक सम्बन्धि दिल्ली राजसूय के शुभ अवसर
पर भारतीय प्रजा की बधाई वा उसके आन्तरिक
आनन्दोद्गार सूचक एक निबन्ध ।

श्रीमान् के युवराजावस्था में भारत आगमन के अवसर पर "युवराजाभिषेक"
स्वर्गीया महारानी के भारत राजराजेश्वरी पद ग्रहण महोत्सव पर "भारत
भाग्योदय" राजराजेश्वरी की प्रथम जुबिली पर एक "मित्र काव्य"
हीरक जुबिली के अवसर पर "हार्दिक हर्षादर्श" प्रणेता और
समर्पण कर्त्ता तथा अन्य अनेक गद्य पद्य नाटकादि के कवि
और रचयिता. नागरी नीरद नामक साप्ताहिक
समाचार पत्र और आनन्द कादम्बिनी नाम्नी
मासिक पत्रिका के सम्पादक

प्रेमघनोपनामक

उपाध्याय श्री बदरी नारायण शर्म्मा (चौधरी)

रचित और समर्पित ।

بملازماں سلطاں کہ رساند ایں دعا را — کہ بشکر پادشاہی نظرے کند گدا را

मीरजापुर

आनन्द कादम्बिनी प्रेस में मुद्रित हुई ।

स० १८०२ ई० ।

H
891·4318
U 316 b

SHELF LISTED

NATIONAL LIBRARY
NO. 10101
DATE 1·7·60
CALCUTTA

भूमिका ॥

हमारे नवीन महाराज श्रीमान् सम्राट् सप्तम एडवर्ड के विलायती राजसिंहासनासीन होने के साथही साथ दिल्ली दर्बार का आन्दोलन भी आरम्भ हो गया था, और स्वाभाविक राजभक्ति भी तभी से लेखनी सञ्चालन के लिये प्रेरणा कर चली थी, परन्तु जब भारत में भी पुनः यही उत्सव मनाया जायगा तो पुनरपि उसी पांठ के पठन की आवश्यकता होगी, अतः इससे वही समय अधिक उचित होगा; विशेषतः दिल्ली दर्बारही के अवसर पर भारत की प्रजा का बधाई देना भी अधिक आवश्यक समझ चुप हो, समय प्रतीक्षा कर चला। दिन जाते क्या लगता है, वह दिन भी दूर न रहा, यहां तक कि निज नगर में भी उत्सव का पूर्वरूप लखाई पड़ने लगा और लोग दिल्ली के लिए भी उठ खड़े हुए; किन्तु यहां यही समझे बैठे रहे कि बधाई के लिये दस बीस पंक्ति की कविताहीतो क्या है? एक वा दो दिन में घसीट देंगे। निदान १५ दिसम्बर को कलकत्ते से उत्तम कागज़ रोशनाई आदि मगाने को चिट्ठी लिखकर जो लेखनी उठाई तो यह बधाई लिखते २ बढ़ चली। चाहा था कि एक फ़ार्म में समाप्त होगी, परन्तु वह दो से भी अधिक में समाप्त होने का रंग लाने लगी। उधर दिल्ली

दर्बार की भरमार में डिकिन्सन के स्टाक ने कागज़ आदि के लिए कोरा उत्तर दे दिया, इधर अपना भी विचार दिल्ली देखने का हो पड़ा। सुतराम् स्वनगर लभ्य कागज़ ही पर छपना निश्चय कर, उसको काटकूट छोटी कर, एक फ़ार्म को शोध, और शेष प्रेस में देकर २५ ता० को दिल्ली चल दिया; और वहीं पर किसी प्रकार पाकर इस आप लोगों की बधाई को अर्पित और कुछ वितरित भी कर सका। सारांश शीघ्रता के कारण इसमें जो दोष वा त्रुटि हों, क्षन्तव्य हैं।

प्रार्थी,
रचयिता।

समर्पण।

श्रीमान् विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत
महामान्य सम्राट् श्री सप्तम एडवर्ड की सेवा में ।

महाराज !

आज आप के भारत साम्राज्य के राज्याभिषेक के उत्सव का शुभ दिवस है, वा यों समझिये कि विश्वविमोहनी प्यारी भारत भूमि के महाराज आज स्वामी होते हैं, जो निश्चय बड़े सौभाग्य का विषय है। क्योंकि जब श्रीमान् ने युवराज स्वरूप में यहाँ पदार्पण कर निज दर्शन से हम लोगों को कृतार्थ किया था, तो हम लोगों ने यह समझा कि जो अद्यपर्य्यन्त यूरप के किसी नरेश ने हमारे देश को निज नेत्रों से नहीं देखा, तो कैसे सम्भव था कि उसे हमारा स्वरूप ज्ञान होता, और क्यों वह हमको अपनी अन्य प्रजाओं से विशेष समझता? एवम् अब जो आप ने हमें देखा और हमारी राजभक्ति ने भी आपके मन को मोहित किया, तो नई २ आशाएँ भी होने लगीं, और निश्चय हो गया कि श्रीमान् के राजसिंहासनारूढ़ होने पर एकही साथ हमारे सब दुःख दूर हो जायँगे।

للہ الحمد ہرآں چیز کہ خاطر میخواست آمد آخرز پس پردہ تقدیر پدید

ईश्वरानुग्रह से वह चिरदिन प्रार्थित दिवस आज उपस्थित है। फिर हमारे हर्ष की सीमा कहाँ है?

हमारी आन्तरिक दशा चाहे महाराज से छिपी हो तो आश्चर्य्य नहीं, परन्तु हमारी सच्ची राजभक्ति से श्रीमान् कदापि अपरिचित नहीं हैं। अस्तु, हम भारतीय प्रजाओं की यह बधाई अत्यन्त विनम्र भाव से श्रीमान् की सेवा में समर्पित की जाती है, कृपा कर स्वीकार कर निज दीन हीन प्रजावृन्द पर दया विस्तार कर कृतार्थ कीजिये। अलमिति किम् बहुना।

मिरजापुर
१ जनवरी १९०३।

श्रीमान् का—
एक अकिञ्चन राजभक्त,
श्री बदरी नारायण प्रेमघन।



भारत बधाई।

दोहा॥

ईस दया सों बहु बरिस जियहु सहित सुख साज।
हे सप्तम ऐडवर्ड तुम नव महराज धिराज॥

हरिगीती छन्द॥

मंगल दिवस वह धन्य अति सुभ जब दयादृग फेरिकै।
जगदीस करुनासिन्धु भारत दसा आरत हेरिकै॥
अन्यायमय दुस्सह दुखद अति निद्य राज निवेरिकै।
सुभ सुखद सासन पार सात समुद्रहू लैं टेरिकै॥
आन्यो एतै व्यापार के मिसि बनिक बनक बनाइकै।
अँगरेज मनुजन को सहजहीं लाभ लोभ लगाइकै॥
करि शक्ति साहस वृद्धि सासन आस उर उपजाइकै।
अन्धेर दृश्य दिखाय तिनहिँ प्रयास विजय कराइकै॥
धनि दिवस वह पुनि अवसि चमकनि भाग भारत भाल की।
बिनसन कुराज सिराज सठ संगहि कुनीति कुचाल की॥
बिहँसी पलासी भूमि सीमा निरखि कष्ट कराल की।
जब वीरवर क्लाइव लही बाँकी विजय बंगाल की॥

दोहा॥

ईस्ट इण्डिया कम्पिनी को सुखदायक राज।
धन्य जाहि लहि देस यह खोयो दुख के साज॥

हरिगीती ॥

धनि दिवस वह जब आपकी माता महारानी भईं ।
इहि देस की पालिनि सहज सब भूलि अपराधहि गईं ॥
सुत जननि लौं हरखाय इहि निज छत्र छाया तर लईं ।
निज दया विस्तारत भईं, आरति हरन मैं मन दईं ॥

रोला छन्द ॥

धन्य ईस्वी सन अट्ठारह सौ अट्ठावन ।
प्रथम नवम्बर दिवस, सितासित भेद मिटावन ॥
अभय दान जब पाय प्रजा भारत हरषानी ।
अरु लहि उन सो दयावती माता महरानी ॥
राज प्रतिज्ञा स[illegible]त, सान्ति थापन विज्ञापन ।
मैं अधिकार अधिक निज पुष्ट विचार मुदित मन ॥
अति उन्नति आसा उर धरि बिन मोल बिकानी ।
श्रीमति हाथनि, मानि उन्हैं निज साँची रानी ॥
बहुत दिनन सों दुखी रही जो भारत बासी ।
प्रजा दया की भूखी, न्याय नीर की प्यासी ॥
पसु समान बिन ज्ञान, मान बन रही भरी डर ।
फेरि तिन्हैं नर कियो सहज लघु दिवस अनन्तर ॥
दियो दान बिद्या अरु मान प्रजान यथोचित ।
अभय कियो सुत सरिस साजि सुख शाज नवल नित ॥
श्रीमति भईं राज राजेसुरि जबै हमारी ।
गईं सुतन्त्र नाम सों हम सब प्रजा पुकारी ॥
यह नहिं न्यून हमारे हित, गुनि हिय हरषानी ।

लगीं असीसन उन्हैं जोरि ईसहिँ जुग पानी ॥
जिन असीस परभाय जसन जुबिली दिन आयो ।
पुनि इन भक्त प्रजन को मन औरौ हरषायो ॥
देन लगीँ आसीस फेरि यैं होय मुदित मन ।
यथा एक बदरी नारायन सुकवि "प्रेमघन" ॥
"ईस कृपा सोँ और एक जुबिली तुव आवै !
फेरि भारती प्रजा ऐस ही मोद मनावै !!"
धन्य धन्य वह दिवस, जु पूजी आस हमारी !
भई दूसरी हीरक जुबिली आनन्दवारी !!
पर्‌यो अकाल कराल इतै जब महा भयंकर ।
जस नहिँ देख्यो, सुन्यो कबहुँ कोउ भारतीय नर ॥
कहैं अन्न की कौन कथा? जब कन्द, मूल, फल,
फूल, साग अरु पात भयो दुरलभ इन कहँ भल ॥
जौ न दया करि देवि दान दरियाव बहातीँ ।
कोटिन प्रजा हिन्द की अन्न बिना मरि जातीँ !!
पर उपकार विचार प्रजा पालन हित केवल ।
नहिँ भूलेहुँ जामैं कहुँ लखियत स्वारथ को छल ॥
नहिं तौ पेट चपेट परी परजा भारत की ।
किती न बनि कृस्तान दसा खोती आरत की?

हरिगीती ।

ऐसो नृपति जौ मिलै धरम धुरीन उपकारी महा ।
अन्याय पूरित देस को दुख दुसह सों जो भरि रहा ॥

याके निवासी नर जु तापैं प्रान धन वारन चहा।
तौ लखहु नेक बिचारि यामैं बात अचरज की कहा॥

दोहा॥

सबै गुनन के पुञ्ज नर भरे सकल जग माहिँ।
राजभक्त भारत सरिस और ठौर कहुँ नाहिँ॥
याको अधिक बखान अति आवश्यक न लखाय।
निरखि गये जिहि आप निज नैनहीं इत आय॥
जब जुवराज स्वरूप मै स्वागत हित हरखाय।
उमड़्यो भारत सिन्धु ससि तुव मुख दरसन पाय॥
तन मन धन वार्‍यो प्रजा तुम ऊपर अवनीस।
दियो सबन के संग जब हमहूँ यह आसीस॥

सवैया।

"लहि नीति भलैं प्रजा पालिकै आछे बनौं सदा भारत प्रान पियारे। जीयो हजार बरीसलौं द्योस हजार बरीस समान जे भारे॥ बद्री नारायन होय प्रताप अखंड महा महराज हमारे। यौँ चिरजीवी सदाईँ रहो सुखसौं बिक्टोरिया देबि दुलारे॥"

हरिगीती।

इन सकल सुभ अवसरन पर भारत प्रजा हरखाय कै।
निज राजभक्ति दिखाय दीन्यो सकल जगत लजाय कै॥
किमि चूकतीं जो दुख सहत बहु दिन रहीँ बिलखाय कै।
सब भाँति सुख ही लहीं सासन श्रीमती जिन पाय कै॥

दोहा ॥

किये राज राजेसुरी जो भारत उपकार ।
ताहि भला कैसे कोऊ कहिकै पावै पार ॥

हरिगीती ॥

यह सकल उन्नति औ सुगति लखि परत है जो इत भई ॥
उनकीन उनविंसति सताबदि संग पूरन सुख मई ॥
अरु बीसवीं की बघी उन्नति भार भारत की नई ।
धरि सीस पैं श्रीमान के संगहि अनोखी ठकुरई ॥
सुख भोगि राजदराज राख्यो एकहू नहिं अरि कहीं ।
परिवार सुन्दर सहित पूरन आयु सत कीरति लहीं ॥
परजन सकेलि असीस गुनि निःसार इहि संसार हीं ।
पद ईस अरचन देवि विक्टोरिया सुरपुर पथ गहीं ॥

सोरठा ॥

समाचार यह आय । हाहाकार मचाय अति
भारत को अकुलाय कियो अधिक आरत महा
पै लखि तुम कहँ देव केवल धास्यो धीर पुनि
तुम उनमें नहि भेव समझि सहज सन्तोष गहि ॥

हरिगीती ॥

जो समुद तासु तरंग सोइ, जो कनक कंकन सो अहैं ।
जो मातु पितु सुत सो, विटप जो बीज सुइ सब कोउ कहैं ॥
जो वै रहीं सोइ आप तासों गुनहु सब समहीं चहैं ।
जो आस उनसों रही तब श्रीमान् सों सोइ सकल हैं ॥

द्रुतविलम्बित ॥

अधिकही उनसों बरु आप तैं ।
करत भारत आस हुलास तैं ॥
नृपति राज विराजत रावरे ।
न रहिहैं दुख सेस जु हैं अरे ॥
समुझि आपु गए जिहि आइकै ।
निरखि भक्ति प्रजान अघायकै ॥
अब न क्यों तिनकी सुधि आइहै ।
सकल भारत उन्नति पाइहै ॥
प्रथमहीं निज बानि दयामयी ।
जननि लौं जग को दिखला दयी ॥
समर पूअर बूअर बन्द कै ।
अभय कै धन बीसन कोटि दै ॥

दोहा ॥

तासों जाके हित रह्यो बहु दिन सों लौ लाय ।
आजु पाय दिन सो हरखि फूलो अँग न समाय ॥
करत प्रजा उपकार नृप राज मुकुट सिर धारि ।
तुम पीछे राजा भये प्रथम दया विस्तारि ॥
सो जस ससि परकास तुव रह्यो दिगन्तन छाय ।
जोहत जिहि जग राजकुल कमल गए सकुचाय ॥
गुन अनुरूपहि गुन दियो ईस अधिक अधिकार ।
सुनि गुनि सुनि गुनि पाय जिहि चकित भूप संसार ॥

रोला छन्द ॥

साँचे नृप भारत के रहे सकल नृप ऊपर।
फिरत दुहाई सदाँ रही इनहीं की भू पर ॥
सदा सत्रु सों हीन, अभय, सुरपति छबि छाजत।
पालि प्रजा भारत के राजा रहे बिराजत ॥
पै कछु कही न जाय, दिनन के फेर फिरे सब !
दुरभागिन सों इत फैले फल, फूट बैर जब !!
भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत !
भये बीरबर सकल सुभट एकहि सँग गारत !!
मरे बिबुध, नरनाह, सकल चातुर गुन मण्डित !
बिगरो जन समुदाय बिना पथ दर्शक पण्डित !!
सत्य धर्म्म के नसत गयो बल, बिक्रम साहस।
बिद्या, बुद्धि बिबेक बिचाराचार रह्यो जस ॥
नये नये मत चले, नये झगरे नित बाढ़े !
नये नये दुख परे सीस भारत पैं गाढ़े !!
छिन्न भिन्न ह्वै साम्राज्य लघु राजन के कर
गयो, परस्पर कलह रह्यो बस भारत में भर ॥

बरवै ॥

तबसों भारत की गति अति बितरीत।
जाकी कहँ लगि गावैं गन्दी गीत ॥
बहु दिन की यह आरत भारत भूमि।
बची कोऊ बिधि जननी तुव पद चूमि ॥

जो इहि पालि जियायो करि पुनि पुष्ट ।
मारि सकल दुखदायक याके दुष्ट ॥
पठयो तुमहिं याहि पति बरिबे काज ।
मोह्यो तब तुम याको मन महराज ॥
लगन लगी तबहीं सों तुम सन जासु ।
बहु दिन पीछे पूजी है अब आसु ॥
मन भायो पति पायो तुम कहँ आज ।
किन रसराती साजै मंगल साज ॥

हरिगीती ॥

धनि दिवस यह साँचे जु भारत भूमि स्वामी तुम भये ।
इहि सम न भूपत्नी न तुम सम भूपती कहुँ जग जये ॥
पागी परस्पर प्रेम जोरी जुगल लहि सुख नित नये ।
बहु बरिस लौं नीके रहौ आनँद निज परजन दये ॥

बरवै ॥

दिल्ली बनी दूलहिन सजि सुभ साज
जग मन मोहनि सोभा वाकी आज ॥
नगरी सकल सहेली सखी सयानि ।
लगीं सजीले साजन सजि सतरानि ॥

दोहा ।

अटक कटक के बीच को सिगरो आरज देस ।
अति आनंद लखि परत जनु रह्यो न दुख को लेस ॥
द्वार द्वार यव कलस युत, तोरन बन्दनवार ।
कदली खम्भ सजे धजे सुभ सूचक व्यवहार ॥

ध्वजा पताका फरहहिं मानहुं मेघ समान ।
चमक चंचला सी परैं आतस बाजी जान ॥
वारवधू मिलि गावती सबै बधाई आज ।
कथक कलामत नट गुनी, करत सुबारक साज ॥
कवि कोविद पण्डित सबै, नाना कवित बनाय ।
राजभक्ति जनि साचहूँ, देते प्रगट दिखाय ॥
जय २ जय है सुनिय परत, भारत मैं चहुँ ओर ।
मंगल मंगल को रह्यो आज महा मचि सोर ॥

तोटक।

घरही घर मंगल मोद मच्यो ।
सबही जनु व्याह विधान रच्यो ॥
सबही उर आज उछाह महा ।
सबही अति आनँद लाहु लहा ॥

बरवै।

दिल्ली के दरवाजे सजी बरात ।
जनु जगजन जुरि आये इतै लखात ॥
लण्डन सों सँग लैके कैयो लाट !
सहिबाले सजि आये ड्यूक कनाट ॥
भारत के प्रभु आये वाइसराय ।
कलकत्ते सों दल बल सँग हरखाय ॥
सेनापति वर किचनर भारत देस ।
लांघि समुद आए गुनि अवसर बेस ॥

DBA000010101HIN

मन्द्राज पति और बम्बई नाथ ।
ब्रह्मदेस पालक, बंगेश्वर साथ ॥
युक्तदेश पति, सासक मध्य प्रदेस ।
सीमा देशेसर अरु आसामेस ॥
वङ्ग और पञ्जाबी सेना नाथ ।
आए सब धाये निज सेना साथ ॥

दोहा ॥

रसीडंट एजंट सब देस देस तैं धाय ।
राजे महराजे सकल आये हिय हरखाय ॥
गैकवार सेना सजि चले भूप मैसोर ।
लै निजाम भट अरब संग, भूपति ट्रावंकोर ॥
जम्बू अरु कश्मीर के नृप कश्मीरी सैन ।
चले सजाये साथ निज निरखत अरि दुख दैन ॥

भुजङ्ग प्रयात ।

चले सेंधिया संग लै सैन भारी ।
चले होलकर, ओरछा छत्रधारी ॥
महाराज रीवाँ, नृपौ दत्तिया के ।
चले धार, देवास, चर्खारि ताके ॥
चले भूप जैपूर, बूँदी नरेसा ।
चले टोंक नव्वाब कीने सुवेसा ॥
सिरोही प्रजानाथ लै कै सिरोही ।
भजै सैन जा सैन को देखि द्रोही ॥

tional Library,
Calcutta 18161 Dt 1.7.60
Re 1.00

दोहा ॥

नृपति करौली तैसही कोटा बीकानेर ।
अलवर, झालावार, नृप लै दल जैसलमेर ॥
चले राजगढ़, नृसिंहगढ़, छत्रपूर महराज ।
कासिराज, अवधेस लै तालुकदार, समाज ॥

भुजङ्गप्रयात ।

नवाबौ चले धायकै रामपूरी ।
बहावलपुरी हू लिये फ़ौज रूरी ॥
चले झींद, नाभा, नृपौ पट्टियाला ।
कपूरथला, कोटला साजि भाला ॥

दोहा ।

चले फरीद्दी कोट नृप तथा राज सिर मौर ।
पहुँचे खान खिलात के सजि सेना तिहि ठौर ॥
लिमड़ी, कोलहापूर नृप, कच्छ, खैरपुर रान ।
सेहर, गोकला के चले सजे सैन सुलतान ॥
टिपरा नृप, करि कूच नृप पहुँचे कूच बिहार ।
मनीपूर नृप, सिकम के आये राजकुमार ॥

भुजङ्ग प्रयात ।

कहाँ लौं भला नाम सूची सुनावैं ।
कहे कौनहूँ भाँति क्यों पार पावैं ॥
बचो भूप को आज है देस माहीं ।
सजे सैन जो है इहाँ आय नाहीं ॥
धनी औ गुनी देस के औन मानी ।

सबै हैं जुरे राजधानी पुरानी ॥
सबै सक्ति के आहरे साज साजे ।
परैं जानि साधारनौ लोग राजे ॥
सबै देस औ दीप के लोग आये ।
न जाने परैं आपने औ पराये ॥
चले हाथियों की जबै झुण्ड कारे ।
मनौ मेघ माला धरा आज धारे ॥
जुरी लच्छ सेनाखिधारा चमंकैं ।
सु ज्यों बीजुरी बीच वाके दमंकैं ॥
सबै सूर सामन्त धारे उमंगैं ।
कलापीन के वे नचावैं तुरंगैं ॥
सजे जान हैं वे प्रमान आज आये !
मनौ मेदिनी स्यामही सरप छाये ॥
छुटैं तोप की बाढ़ कै सोर भारी ।
गरज्जैं मनौ मेघ आकास चारी ॥
उड़ी धूरि धूआँ मिली व्योम जाई ।
दिनै पावसी जामिनी सी बनाई ॥
अलंकार भूपाल के रत्न राजी ।
चमंकैं लखैं जोगिनी जोति लाजी ॥
बढ़े बन्दि बानी बिरद्दैं उचारैं ।
सु जीमूत को ज्यों पपीहे पुकारैं ॥
कई लच्छ की भीर भारी भई है ।
धारा धन्य या भार को जो लई है ॥

दोहा।

लगो चाँदनी चौक मे ह्वै लाहौरी द्वार।
लौटी जबै बरात यह जाको वार न पार॥
करि स्वागत सत्कार बहु जासु लाट पञ्जाब।
जनवासो मैदान मैं दीनो सजित सिताब॥

हरिगीती।

सोभा निरखि कै बात कछु कहि जात नहिँ अचरजमयी।
पहुनी पचीसन मील की जनु बनि गई नगरी नयी॥
तम्बू तने अनगिनित स्रेनी बद्ध भागन मैं कई।
सब देस देस नरेस, सासक निवसि जित सोभा दई॥

भुजङ्ग प्रयात।

सिँची चारु बीथी नई ही नई हैं।
बनी फूलवारी कहूँ पै कई हैं॥
खिले फूल हैं ढेर के ढेर सोहे।
भ्रमैं भौँर भूले जहाँ चित्त मोहे॥
कहूँ पै हरी दूब है खूब सोही।
कहूँ कुंज छाजे मनैं लेत मोही॥
कहूँ कुण्ड के बीच छूटैं फुहारे।
बने चाम केते प्रभा धौलधारे॥

नाराच।

ठौर क्रीड़ नादि के बने अनेक हैं कहूँ।
विश्व वस्तु सों भरी लगी सुहाट हैं कहूँ॥
नीर वाहिनी नलै सुठौर ठौर हैं बनी।
दीप दामिनी प्रभा सु आस पास हैं घनी॥

तार, डाक, औषधालयादि हैं बने कहूँ।
भाँति २ के अराम साज बाज हैं चहूँ॥
रेल ठौर २ दौरती छटा दिखावती।
जाति एक, दूसरी तहीं तुरन्त आवती॥
है प्रदर्शनी जहाँ खुली धरित्रिसार लौं।
लाख वस्तु हैं तहाँ परी जु देखि ना कभौं॥
जासु साज बाज को बखान कौन कै सकै।
विश्व मोहनी प्रभा निहारि हारि ही रहै॥
लाखनै ध्वजा पताकवृन्द फरहरात हैं।
लाखनै प्रकार कौतुकौ जहाँ लखात हैं॥
बाजनै विचित्र भाँति २ के बजैं तहाँ।
किन्नरी लजात साज संग के सुनै जहाँ॥
बाल नाच को बिलोकि अप्सरी भुलाति हैं।
राग रंग हाव भाव रूप सों लजाति हैं॥
देखि सुन्दरीन के विलास हास वेस को।
भूषनादि जासु खार देत हैं धनेस को॥
अग्नि क्रीडनादि छूटि २ कै बिलायती।
व्योम बीच मैं बसन्त बाटिका बनावती॥
अस्त्र शस्त्र भाँति २ के जहाँ चमंकते।
छूटि अग्नि बान बज्र नाद से घमंकते॥

दोहा॥

सिविर सकल भूपाल के अलग २ दरसाहिँ।
सकल देस सोभा जहां एकहि ठौर लखाहिँ॥

एक २ हेरे जिन्हैं हेरे बुद्धि हेराहिँ ।
जिनकी श्री लखि देवगनहूँ ललचैं मन माहिँ ॥
तिन सब को सिर मौर जो साम्राज्य दरबार ।
हित, महान मण्डप सजो सोभा को आगार ॥
भये सुसोभित आय जहँ चुने जगत के लोग ।
महराजे, नब्बाब, राजे, राने दै जोग ॥
सबै धनी, मानी, गुनी, अतिथि, मित्र और इष्ट ।
सचिव, दूत, सासक, सुभट, पंडित आदि प्रविष्ट ॥
सबसे ऊँचे राज सिंहासन वर पर आय ।
आय बिराजे नृपन सों सेवित बाइसराय ॥
आज भाग्य उनके सरिस किन पायो जग और ।
सम्मानित ऐसो भयो कब को कौन किहि ठौर ॥

हरिगीती।

मन हरन परजन लाट करजन तहँ पुरोहित से बने ।
भारत अवनि मन हरनि सँग श्रीमान को सुख सों सने ॥
सुभ गाँठि जोरी; जुगल जोरी की कुसल चहि सब जने ।
मङ्गल कुलाहल करत "मङ्गल जयति जय जय जय" भने ॥

दोहा॥

अनुसासन श्रीमान् को श्रीमुख सबहि सुनाय ।
सभा सदन गन के मनहिँ सुखन दियो हुलसाय ॥
भारत पति नवराज राजेसर तुम कहँ मानि ।
सुनि सासन सादर सबन नाये सिर सुभ जानि ॥

छुटीं तोप, फहरीं ध्वजा, बजे बधाई बाज ।
भारत अवनि बधू मनौ जानि सुअवसर आज ॥

हरिगीती।

देती बधाई ब्याज सों करिके सगाई आप सों ।
सन्मान जग दुर्लभ लहन हित बिनहिँ श्रम सन्ताप सों ॥
धरि आस दृढ़ बिस्वास छूटन सेस निज दुख पाप सों ।
चाहति सनेह बिसेस तुव सबही सपटिन कलाप सों ॥

दोहा।

हुलसि हिये सारी प्रजा दया दुहाई देति ।
अरज करन की जोरि जुग करन रजायसु लेति ॥

रोला छन्द॥

निरप सुभ अवसर यह हम सब कहँ सुखदायक ।
जो आनन्द मनावैं हम, है वाके लायक ॥
देहिँ जु कछु बकसीस आप, लायक यह वाके ।
मागैं जो हम, लायक यह देबे के ताके ॥
चहत न हम कछु और, दया चाहत इतनी बस ।
छूटैं दुःख हमरे, बाढ़ै जाओं तुमरो जस ॥
भारत के धन अन्न और उद्यम ब्यापारहिँ ।
रच्छहु, वृद्धि करहु साँचे उन्नति आधारहिँ ॥
बरन भेद, मतभेद, न्याय को भेद मिटावहु ।
पच्छपात, अन्याय बचे जे तिनहिँ निवारहु ॥
पूरन मानव आयु लहौ तुम भारत मागनि ।
पूरन भारतीन की करत सकल सुख साधनि ॥

उमड़ै भारत मैं सुख, सम्पति, धन, विद्या, बल ।
धर्म्म, सुनीति, सुमति, उछाह, व्यापार ज्ञान भल ॥
तेरे सुखद राज की कीरति रहै अटल इत ।
धर्म्म राज रघु राम प्रजा हिय मैं जिमि अंकित ॥

॥ इति ॥

National Library,
Calcutta-27.